

**Qissa - e - Mehrafroz - o - Dilbar**

**by : Iswi Khan Bahadur**

**Edited by : Masood Husain Khan**

**First Edition 1966**

**समर्पण**

दिल्ली की बोली के मर्मज्ञ

माननीय आगा हैदर हसन 'देहलवी'

की सेवा में

**Price Rs. 8-00**

*Can be had of :*

Department of Urdu,  
Osmania University,  
Hyderabad-7 A. P.

हैं और आपस में खेलती हैं। कोई तो तालियाँ दे दे के दौड़ती है, कोई छुप रहती है, कोई उसे ढूँढती फिरती है, कोई आपस में खड़ी हँसती है, कोई फुआफूँ आपस में खेलती है, कोई बाग ही की सैर करती है, कोई फूल तोड़ कानों पर रखती है, कोई फूलों को हाथों पर रखती है, कोई दरख्त की डाली हाथ में पकड़ कर गावती है, कोई खुशी में जो आए है सो खड़ी नाँवती है, कोई किसी से मजाखूँ करती है कि तू इस बाग में अकेली सैर करती है सो अच्छी नहीं लगती, कोई और तेरे साथ होए तो अच्छी लगे, वह दोड़ के उसके होंठ मलती है। कोई आपस में उस बाग ही की तारीफ़ करती है, कोई सघन दरख्तों में जो दौड़ती फिरती है, सो ओढ़नी जो उनकी चमकती है जरी की, सो गोया जुगनियाँ चमकती हैं या बादल में तारे चमकते हैं सो नजर आवते हैं। या दामनी है कि घटा में कौदती है और तैसे ही जड़ाऊ सुतूनों के झूले हैं और जड़ाऊ हिण्डोले हैं। सो कोई जड़ाऊ हिण्डोले पे झूलती है, कोई झूले पे झूलती है। तो वहाँ तैसे ही तो मोर व कोकिल, पपीशा व लाल, हज़ारदास्तान व तूती<sup>१</sup> और अकसाम अक़साम तरह के जानवर बोलते हैं और तैसे ही उन्हीं के गले हैं कि कोकिल से भी सरस है। उन्हीं में कोई गावे है, कोई बोले है, कोई पुकारे है, ऐसा समय बन आया है कि देखने व सुनने से ताल्लुक रखता है कि इस्तक़लाल चाहिए कि आदमी का होश बजा रहे, कि यकायक तख्त दिलवर का आवता है। फ़क़त<sup>२</sup> एक लाल का तख़न है और परियाँ उसे लगी हैं। तिस के ऊपर एक मानिन्द<sup>३</sup> आपनावे-दरख़्शा<sup>४</sup> के है कि जो बैठो चली आवती है। जिस तरह कि सूरज के तेज के आगूँ सूरज कूँ कोई नहीं देख सकता, तिसी तरह इसके तेज के आगूँ कोई इसे नही देख सकता। और एक सब्ज़<sup>५</sup> जोड़ा

तारकशी<sup>१</sup> का है कि जिसे मनो की दरदामन<sup>२</sup> लगी है। एक-एक मन उसकी ऐसी है कि रात को बजाय<sup>३</sup> सूरज के है। तो ये मनी नहीं है कि वह दिलबर, जो सूरज है, तिस की ये किरन<sup>४</sup> हैं। और जिस वक्त कि उसका तख्त आया, हरचन्द<sup>५</sup> कि उस वक्त दिन था लेकिन उसकी जोत ऐसी हुई, तिस से यही मालूम हुआ कि अब ताई आपताब<sup>६</sup> न था, गोया<sup>७</sup> अब आपताब उगा<sup>८</sup> है। नाँव तो उसका दिलबर है लेकिन हर एक अंग उसका दिलबर<sup>९</sup> है। तो बाल उसके कैसे हैं कि सियामताई<sup>१०</sup> उसकी मिसाल<sup>११</sup> नहीं रखते। सुचिक्कनता उसमें ऐसी है कि आशिक<sup>१२</sup> का दिल जो शोला<sup>१३</sup> पकड़ता है, सो उसी की चिकनाई से। और सुकुमारता उसमें ऐसी है कि और जो आलम<sup>१४</sup> में सुकुमार बसते हैं सो गोया उसका अक्स<sup>१५</sup> है। दृष्टकारी जो है सो गोया छड़ियाँ हैं कि देखे से आँवों में उपटती हैं और छड़ी तो लगे से उपटती हैं ये देखे से उपटती हैं। और मुख जो उसका मानिन्द चाँद के है सो ये घटा है कि उसके आस पास आई है और या यह नगिनी है कि चाँद के अमृत पीवने को आई है। और चोटी के गूहने के जो ये पेच हैं, सो पेच नहीं हैं, बल्कि यह नागिन है कि ऐड़ी जो उसकी नोले<sup>१६</sup> स्वरूप है, तिस कूँ देख के अदहटी<sup>१७</sup> है। और पेशानी<sup>१८</sup> जो उसकी आपताब से भी रौशन है, जिस जग्ग रौशनी उस पेशानी की पड़े है। सो सारी उम्र कोई आपताब कूँ नहीं याद करे। और आपताब वहाँ निकले है सो शर्मिन्दा<sup>१९</sup> होता है। और बैना<sup>२०</sup> जो इन ने लगाया है तिस में जो मरवारीद<sup>२१</sup> हैं, हर चरचन्द कि यकता<sup>२२</sup> हैं आवदारी<sup>२३</sup> में, लेकिन आवदारी आँगू रंग इसके के मालूम नहीं होती। और बैना जो इसका हीरो का है, सो मानिन्द आपताब के है। और मुह जो उसका है सो मानिन्द चाँद के है, सो मानो यह किरानुस-साईन<sup>२४</sup> हुआ है वास्ते जाँबख़शी आशिक के। और माँग जो इसकी है, तिसमें

१. फर्तीदकारी का जोड़ा २. सणि ३. झाटर, मोट ४. स्थान पर ५. यद्यपि ६. सूरज ७. मानो ८. उदित ९. मनहर १०. श्यामता ११. उपमा १२. प्रेमी १३. जवाला १४. संसार १५. प्रतिबिंब १६. नेवला १७. निडर १८. मस्तक १९. लज्जित २०. झमर की प्रकार का एक आभूषण जो दुल्हन को पहनाते हैं। २१. मोती २२. अन्ठठा २३. चमक २४. शुभ मिलन।

१. लड़कियों का एक खेल जिसमें वे हाथ मिला कर एक चक्र में चक्फेरियाँ ले के खेलती हैं २. मन्नाक का उच्चारण (यह विचार गलत है कि 'क' का 'ख' में परिवर्तित केवल दकनी उर्दू की विशेषता है। उत्तरी भारत की उर्दू में भी कुछ शब्दों में यह परिवर्तन होता है जैसे—सन्दूख, बन्दूख इत्यादि) ३. प्रशंसा ४. जुगनू ५. स्तंभ ६. ईरान का एक पक्षी जो छोटे तोते से मिलता-जुलता है ७. सम्बन्ध ८. धैर्य ९. स्थित १०. केवल ११. जैसे १२. चमकीला सूरज १३. हरा।

जो मखारीद लगे हैं तो मानो पाँत हंसों की, कि बाल जो उसके मानिन्द घटा के हैं, तिस में चली जाती है। और भौंहें उसकी ऐसी हैं कि मिसाल उसकूँ धनक की दीजे तो नहीं हो सकती, क्योंकि धनक खिचता है, तब तीर चलता है और ये हमेशा खिची ही रहती हैं और उसका तीर छूटता है, तब लगता है, इसका तीर बगैर छूटे ही लगता है और उसके तीर का बचाव है, इसके तीर का बचाव ही नहीं। और इसके भौंह के जवाब कूँ आसमान<sup>१</sup> ने क्रस्द<sup>२</sup> किया सो उससे भी जवाब दूज के चाँद कर एक ही भौंह का हुआ, दूसरी भौंह का न हुआ। और दूज के चाँद कूँ कोई न देखता पे इससे देखते हैं कि भौंह उसकी से मुनासिबत<sup>३</sup> रखता है। और आँखें उसकी कूँ नरगिस<sup>४</sup> की मुनासिबत दीजे, तो चश्मे-हैरौं<sup>५</sup> रखता है और इसकी आँख तो रसीली है। और खंजन में की जो मुनासिबत दीजे चंचलापन की, तो उसमें चंचलापन नहीं है। वे तलफते हैं इस वास्ते कि कोई हमारे ताईं इन आँखों की मुनासबत दे। और उनका चंचलापन जो है सो पटैती और बकैती का है कि अपने कटाछ के पटे से, उबरने के बाँक से औरों कूँ मारतीं हैं और आप बच रहती हैं, क्योंकि और का असर तो जद होए तद इन से बचे। और जो इनकूँ मुनासिबत खंजन के रंग की और डौल की दीजे तो जद खंजन आँखों के डौल को न पहुचा तब सफेदी फीकी पड़ी और स्याह दाग हुआ। जो उसकी मुनासिबत बादाम से दीजे, तो जब बादाम उसकी मुनासिबत को न पहुचा, तब बादाम की छाती में छेद पड़े। जो हीरे की चमक कूँ और सफेदी कूँ आँख की मुनासिबत दीजे तो जब हीरा उसकी बराबरी का क्रस्द किया, तब लाली आप में पैदा की तो ऐसा गिरा कि डुखी हुआ, क्योंकि जद कोई बड़ों की बराबरी करे सो तो गिरे ही गिरे। और स्याही<sup>६</sup> उसके की ताईं कूँ जो नीलमन<sup>७</sup> की मुनासिबत दीजे तो नीलमन जब उसकी स्याही कूँ न पहुचा, तब नील का टीका लगा और नीलमन कहाया। और कमल को उसकी मुनासिबत दीजे तो कमल में ऐसी चितवन कहाँ? और मृग कूँ जो याकी उपमा दीजे तो मृग में

१. आकाश २. निश्चय ३. उपमा ४. एक फूल जिसकी उपमा आँख से दी जाती है। ५. चकित नेत्र ६. कालिमा ७. नीलम।

ऐसी सफेदी और स्याही और लाल डोरे और मतवारपना कहाँ से पाया। और मृग की आँखें तो उदास हैं, ये गुलगूँ<sup>१</sup> हैं और इसी से उन ने बनबास लिया है। और लाल जो डोरे हैं सो ये डोरे नहीं हैं खंजन रूपी जो मन है ताके पकड़ने के लाल रेशम के जाल हैं, और कर्नफूल जो फूल हैं सो ये कर्नफूल नहीं कमल के फूल हैं कि अपने ताईं, कान जो उसके फूल से हैं, तिसकी बराबरी कूँ आए थे, सो जब इसकी कोमलता व रंग कूँ न पहुचे तब बांध के लटक़ाय दिए कि फिर कोई ऐसा न करे। और जो कानों कूँ मुनासिबत सीप की दीजे तो सीप में एती नरमाई कहाँ? और रंग भी जो एक तरफ़ पाया है सो भी इसके रंग कूँ कहाँ पावे। और काम के छाज का व पहिए का तो क्या मज़कूर<sup>२</sup> है। और नाँक इसकी है सो गोया कुंदन की आड़ है कि आँख जो दोनो कामवंत मस्त हाथी है तिनकी आड़ है और...कूँ... की मुनासिबत दीजे तो कोई अंग इसका ऐसा नहीं जो उसकी मुनासिबत कूँ पहुचे। और गालों के ताईं जो गुलाब के फूलों की मुनासिबत दीजे तो अगर खुशबूई कर व कोमलता कर इसे पहुचे भी तो सफ़ाई गालों की कूँ कहाँ पाँवे, वे मानिन्द आइने के हैं और गालों में जो लाले की पेचक<sup>३</sup> हैं, सो ये पेचक नहीं हैं भँवर है कि जहाँ मन आशिक्र का पड़ता है, सो नहीं निकलता। और यह गाल पे तिल नहीं है प्यारी का मुह जो आईना सा है सो आशिक्र का दिल दाग है, सो उसका अक्स<sup>४</sup> पड़ा है। और होठों के ताईं जो कन्दूरी<sup>५</sup> की मुनासिबत दीजे तो कन्दूरी ने यह नाजूकी<sup>६</sup> व सफ़ाई<sup>७</sup> व खबसूरती कहाँ से पाई। और जो मूंग की मुनासिबत दीजे तो मूंग तो पस्थर है उसकूँ कहाँ पहुचता है। और दाँतों के ताईं जो अनार के बीज की उपमा दीजे तो अनार के बीज इसकी नाजूकी व पतलाई को कहाँ पहुचते हैं, वे तो गोल हैं। और भिस्सी जो इसने लगाई है दाँतों कूँ, और पान जो चाबे हैं, और हँसती जो है सो भिस्सी तो मानों स्याम घटा है, और दाँतों का जो चम-चमाहट है सो मानों बिजली चमकती है स्याम घटा में। और होठों के

१. लाल २. वर्णन ३. पिंडी ४. प्रतिबिम्ब ५. एक लाल रंग का फूल जिसे बिंब भी कहते हैं ६. कोमलता ७. निर्मलता।

ऊपर जो मिस्सी की घड़ी की है और गहरी सुर्खी<sup>१</sup> मानों .....की है, और धुली सुर्खी होठों की है। (इसकी) सोभा ने धनक कूँ किशत दी है। और सेब कूँ जो ठोड़ी की मुनासिबत दीजे तो सेब में इतनी खूब-सूरती और खुशडौली कहाँ। और जुल्फ<sup>२</sup> के ताई कहिए कि जुल्फ नहीं है, आशिक का मन, उसके रूप का जो मस्त हाथी है, तिस के बाँधने की गोया जंजीर है। या ये भौरा है, मुह जो उसका कमल-स्वरूप है, तिस के ऊपर बैठे हैं। तो जंजीर में व भौरों में सुकुमारता व खुशबू और खूबसूरती कहाँ? और गरदन उसकी कूँ जो संख की मुनासिबत दीजे तो संख एक हड्डी है बदन-डौल। और जो सुराही की इसे मुनासिबत दीजे, तो सुराही तो बनाई हुई है, बनाई बस्त असल कर कहाँ पहुँचे। और जो बाहें इसकी कूँ कमल की जड़ की व चम्पे की शाखों<sup>३</sup> की मुनासिबत दीजे तो वे तो एक लकड़ी हैं नातराशी<sup>४</sup> हुई, इसकी खूबसूरती व नजुकाई<sup>५</sup> व खुशडौली<sup>६</sup> कूँ कहाँ पहुँचती हैं। और हाथ इसके के ताई कूँ जो कमल की मुनासिबत दीजे तो कमल जब इसकी खूबसूरती कूँ न पहुँचे तब दिल उनका ज़द<sup>७</sup> हो गया। और जो इसके ताई की मुनासिबत दीजे तो उसके डसने से लोग डर रखते हैं और इसके डसने की आरजू<sup>८</sup> रखते हैं, और उसके डसने का तो इलाज<sup>९</sup> है, इसके डसने का इलाज ही नहीं। और इसकी उंगलियों को जो उपमा फली की दीजे तो फली तो यकसाँ<sup>१०</sup> हैं और वे गावदुम<sup>११</sup> हैं, और इनकी खूबी कूँ कहाँ पहुँचे। और जो इसके, नुहों कूँ चाँद की मुनासिबत दीजे तो दूज के चाँद कूँ जो सब देखते हैं सो इसके एक नुह की कोर कूँ भी नहीं पहुँचता। और छाती इसकी जो सोहनी है सो कैसी ही मोहनी है, और बस करती है। कैसी तरह बस करती है कि तिस से फिर छूटकारा नहीं। और खड़ी है, करेरी है और कंचनबरन है। अडौल<sup>१२</sup> हैं और गोरी हैं व गोल

१. लाली २. लट ३. शाखाओं ४. अनगढ़ ५. कोमलता ( नाजुक से बनी संज्ञा ) ६. सुडौल ७. पीला ८. कामना ९. चिकित्सा १०. एक सा ११. लम्बीतरा, गुण्डाकार १२. गोलाई में कटाव का होना जो पूर्ण रूप से गोल न हो ( यहाँ अच्छे अर्थ में प्रयुक्त ) ।

हैं। और जो इनके ताई मुनासिबत दीजे कंचन कलस की या कंचन के नक्कारे<sup>१</sup> की, या गेंद की या दो नान की या हुबाब<sup>२</sup> की या सुमेर की, सो वे बातें जो सब इनमें हैं सो उनमें कहाँ। और जो कहिए कि ये दोनों छत्रपति हैं, और...इन के साथ है, और मरवारीद की जो माला है, सोई हुई गंगा तिससे नहीं भर सकती...काम का जो कटक है सो आशिक के मारने कूँ...में भरने कूँ है। उर जो है सो चौगान<sup>३</sup> है ता में कुच जो है सो काम निसान<sup>४</sup> है, सो ये निसान कैसे हैं कि अजीत हैं। ता वखें मन रूपी जो गेंद हैं सो निकल नहीं सकते। और जो इसकी कमर कूँ केहरी की मुनासिबत दीजे तो केहरी की कमर तो मोटी है, बदनौल<sup>५</sup> है और इसकी कमर तो पतली है बाल से भी, जद क्रयास<sup>६</sup> कर देखिए तद मालूम होती है। और जो इसके पाउओं कूँ कँवल की मिसाल<sup>७</sup> दीजे तो कँवल इन्हों की खूबी कूँ कहाँ पहुँच सकता है। कँवल चाहता था कि मैं इसकी खूबी कूँ पहुँचूँ सो इसके वास्ते सूरज की तरफ<sup>८</sup> मुह खोलता है कि उसकी कुछ क्रांत मो में आवे तो पहुँचूँ। पर जद उसकी खूबी कूँ न पहुँचा तद फिर शर्मिन्दा<sup>९</sup> होके मुह छुपाए शाम कूँ नीची गरदन करके रह जाता है। और याकूत की जो पाजेब<sup>१०</sup> है सो ये पाजेब नहीं तारागन हैं और हीरों के जो अनवठ हैं इसके पाँव में सो अनवठ नहीं सूरज अपने...रखता था, व जद उसके पाउवों के तेज के भागू,<sup>११</sup>...के तारागन समेत पाउवों लगा। एक एक अंग उसके के एता बिस्तार है और ऐसी खूबी है कि जिस अंग पर नज़र<sup>१२</sup> पड़ती है कि सेंर उसकी से और दामे-हुस्न<sup>१३</sup> उसके से आँगू नहीं चल सकती। सखियाँ भी जो साथ इसके रहती हैं सो वे भी कधी नखसिख से देखती नहीं। तो जैसी ही तो सोभा सब्ज कारकशी<sup>१४</sup> के जोड़े की और तैसी ही झमक लाल ताश<sup>१५</sup> के पायजामे की, और तैसी ही बहार मेहदी<sup>१६</sup> की लाली की। कैसी लाली है, अगर खुशरंग<sup>१७</sup> याकूत उसके हाथ में दीजे तो मालूम न हो और मालूम

१. नकारा, नगाड़ा २. बुलबुला ३. एक खेल (पोलो) ४. ध्वज ५. बेडौल ६. ध्यान ७. उपमा ८. और ९. लज्जित १०. नूपुर ११. दृष्टि १२. सौन्दर्य-जाल १३. हरे रंग की कढ़ाई १४. एक कीमती लाल कपड़ा १५. मेहंदी १६. अच्छे रंग का ।

होए तो उसके आगू फीका लगे । और तैसी ही चमक जड़ाऊ चम्पाकली की और दोलड़ी और धुकधुकी और मरवारीद की तस्बीह<sup>१</sup> और बद्धी, कि जो अपने नाम ही मुवाफिक<sup>२</sup> काम करती है और बाजूबन्द व पहुची व दस्तबन्द<sup>३</sup> व मुमरन व चूड़ी व जहाँगीरी<sup>४</sup> व अंगठी व छल्लों की । और जैसी है खूबी उसके बदन की सुडौली और नाजूक, तो वैसे ही है पर नाजूकी गोश्त लई है कि हड्डी जिसकी तार से भी पतली है । और जैसी है कान्त उसके अंग की और तैसी ही देख-देख खूबी इस बाग की व बिहार सखियों का देख के, खुशी हो कर, एक उमंग उमंग की से, उमंग के ...और झमक कर यकवारगी<sup>५</sup> ही तख्त पर से उतरी और कमर के लचकने की और कूचों के उचकने की और पाँउवों के डिगने की और जवाहिर की जुम्बिश<sup>६</sup> की और जोत फैलने की, ऐसी आन हो गई गोया बिजली थी कि चमक गई और आशिक के दिल पर पड़ी । या शाही<sup>७</sup> है कि आशिक के हंस रूपी मन कू शिकार किया । देख इस समय कू बादशाहजादा ताब न लियाया । पछाड़ खाके ऐसा गिरा कि सुध न रही । वज़ीरजादा क्या करता है, हाँज में से जो गुलाब की नहर चली आवती है उससे छिड़क छिड़क बादशाहजादे कू, होश में लियावता है । और फिर देख-देख बादशाहजादा बहोश हो-हो जाता है । जिस वक्त कि दिलबर सखियों को लेकर सँर बाग की कू चली तो अगर उसकी चाल कू मुनासिबत गंड या हँस या चकौर की दीजे तो इनकी चाल तो मोटी-भारी है और इसकी चाल नाजूक है । जो क्रदम कि रखती है तो हजार नाज़<sup>८</sup> और एहसान<sup>९</sup> ऊपर जाने-आशिक के करती है, कि निगाह आशिक की पाअन्दाज है जिसकी । और नरगिस जो यह फूला है सो नरगिस नहीं, अजबस्कि पाँव उसके करने कू सो जमीन ने भी हजार आँखों कर पाअन्दाज की है । और सुगन्ध उसकी...के समूह चले जाते हैं । और कान्त जो इसकी फैलती जाती है और मरवारीद जो हिलते जाते हैं सो इस सब बिहार

१. माला २. अनुकूल ३. मोती व जवाहरात का लच्छा जो कलाई पर पहना जाता है । ४. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना. एक प्रकार की चूड़ी । ५. सहसा ६. स्पंदन ७. बाज ८. समय ९. हाव-भाव १०. उपकार ।

कू मोर व पपीहा जो देखें हैं सो भवाँ कू तो जाने हैं कि घटा है और कान्त जो उसकी निकले है, तिसको बिजली जाने हैं । और जुंबिश मरवारीद की कू देख के बूंदें जाने हैं । तो यह सोभा देख देख के, खुशबवत<sup>१</sup> हो-हो के ये सब चन्दरी कूकने लगती है । और ओढ़नी उसकी में मन जो लगे हैं सो बालों में कंक की छब देख के और पाँप जो उसके मुख का मरवारीद से भी अधिक है, सो आम का मौर लख के और जोत जो उसकी है, तिस को लाल फूल समझ के, भवों को देख के, कोकिल व कोयल बसंत जान के कुहकने लगें । बाग की सँर कर के जद ये तालाब के ऊपर आई तो कमल जो सूरज की तरफ थे सो इसकी कान्त देख के सभों ने इस तरफ मुह कर दिया और कहा कि अब तक हम अपनी उम्र कू यूँ ही खराब किया, क्योंकि सूरज तो यह है । और कमुदनी....कू देख के और बालों कू उसकी रात जान के और मुख चाँद उसके कू देख के मुदी<sup>२</sup> जो थीं सो खिल गई । और जिस वक्त कि यह सखियों कू ले के पानी में...है तो और और सखियाँ कँवल के फूल ले के गँदबाजी करती हैं और ये भी कँवल फूल कू हाथ में लेके जो फेकती है तो उसके हाथ की जो कान्त फूल में आवती है तो ये सोभा एसी लगती है कि मानो सूरज तारागन उगलता है । और, और सखियाँ किलोलें करती हैं । छटियाँ<sup>३</sup> खेलती हैं और जो उसके हाथ की छटियाँ चलती हैं सो गोया आशिक जो उसके हुस्न कर मारा गया है, तिस के वास्ते ये छीटे नहीं हैं आबि-हयात<sup>४</sup> बरसता है । नहा कर जो दरम्यान<sup>५</sup> का चबूतरा है, तहाँ जाय बैठती है और राग नाँच होता है । फिर साँझ हुए तद तख्त मगवाएके उसके ऊपर बैठ कर उड़के अपने मुल्क कू जाती है । तो बादशाहजादा देख के कहता है कि लोग जो कहते हैं कि अपना जीउ जो निकलता है सो कोई देखता नहीं, सो ये बात तो झूठ है, क्योंकि मैं अपनी आँखों से देखता हूँ कि मेरा तो जीउ ये चला जाता है । ये कह के और आह का नाला<sup>६</sup> मार के बादशाहजादा पछाड़ खायके गिरा तो नीममुदी<sup>७</sup>

१. प्रसन्न २. मुदी (मुंदा) : बन्द ३. पानी में छीटों से खिलवाड़ ४. भ्रमृत ५. बीच का ६. पुकार ७. अधमरा ।

بلکہ یہ ناکن ہے کہ ایڑی جو اُس کی نولے<sup>۱</sup> سروپ<sup>۲</sup> ہے، تس کو دیکھ کے ادھی<sup>۳</sup> ہے۔ اور پیشانی جو اِس کی آفتاب سے بھی روشن ہے، جس جگہ روشنی اِس پیشانی کی پڑے ہے تو ساری عمر کوئی وہاں آفتاب ب ۱۴ کون نہیں یاد کرے۔ اور آفتاب وہاں نکلے ہے تو شرمندا ہوتا ہے۔ اور بینا<sup>۴</sup> جو ان نے لگایا ہے تس میں جو سروارید ہیں، ہر چند کہ یکتا میں آبداری میں، لیکن آبداری، آگوں رنیک اِس کے کے معلوم نہیں ہوتی۔ اور بینا جو اس کا ہیروں کا ہے، سو مانند آفتاب کے ہے۔ اور مہ جو اس کا ہے سو مانند چاند کے ہے، سو مانوں، یہ قران السعدین ہوا ہے واسطے جاں بخشی عاشق کے۔ اور مانگ جو اس کی ہے تس میں جو سروارید لگتے ہیں تو مانوں، پانت<sup>۵</sup> ہنسوں کی ہے، کہ بال جو اُس کے مانند گھنٹا کے ہیں، تس

(۱) نولے: نیولا (۲) سروپ: مثل، مانند (۳) ادھی: نڈر۔  
(۴) بینا: جھوس کی قسم کا ایک زیور جو اکثر دھنوں کو پہنایا جاتا ہے (۵) پانت: قطار۔

تھا، گویا اب آفتاب اُگا<sup>۱</sup> ہے۔ نانو تو اُس کا داہر ہے لیکن ہر ایک انگ اُس کا داہر ہے۔ تو بال اُس کے کیسے ہیں کہ سیامنائی<sup>۲</sup> اُس کی مثال نہیں رکھتی۔ سچکتتا<sup>۳</sup> اِس میں ایسی ہے کہ عاشق کا دل جو شعلہ پکڑتا ہے سو اسی کی چکنائی سے۔ اور سکھارتا<sup>۴</sup> اُس میں ایسی ہے کہ اور جو عالم میں سکھار بستے ہیں سو گویا اِس کا عکس ہے۔ در شٹکاری<sup>۱</sup> جو ہیں سو گویا چھڑیاں ہیں کہ دیکھتے سے آنکھوں میں اوپتی<sup>۶</sup> ہیں۔ اور چھڑی تو لگنے سے اوپتی ہیں بے دیکھنے سے اوپتی ہیں۔ اور مکھ جو اُس کا مانند چاند ہے سو یہ گھنٹا ہے کہ اُس کے اِس پاس آتی ہے، اور یا یہ ناگنی ہے کہ چاند کے امرت پیونے کو آتی ہے۔ اور چوٹی کے گھنٹے<sup>۸</sup> کے جو بچے پیچ ہیں سو پیچ نہیں ہیں

(۱) آفتاب اُگنا: سورج نکالنا (۲) انگ: عضو (۳) سیامنائی (شیامنائی): سیاہی (۴) سچکتتا: چکنا ہٹ (۴) سکھارتا: نزاکت (۵) در شٹکاری: نظریں (۶) اوپتی (اپتنا): لگنا (۷) گھنٹا: گوندھنا

میں چلی جاتی ہے۔ اور بھونہیں اُس کی ایسی ہیں کہ مثال اس کون دھنک کی دیجیے، تو نہیں ہو سکتی، کیوں کہ دھنک کھچتا ہے تب تیر چلتا ہے اور بے ہمیشہ کھچتی ہی رہتی ہیں۔ اور اُس کا تیر چھوٹا ہے تب لگتا ہے، اِس کا تیر بغیر چھوٹے ہی لگتا ہے۔ اور اُس کے تیر کا پچاؤ ہے نہیں۔ اور اِس کی بھونہ کے جواب کون آسمان نے قصد کیا، سو اُس سے بھی جواب دُوج کے چاند 'کر ایک ہی بھونہ کا هوا، دوسری بھونہ کا نہ هوا۔ اور دُوج کے چاند کور کونی نہ دیکھتا، بے اِس سے دیکھتے ہیں کہ بھونہ اِس کی سے بکھ / مناسبت رکھتا ہے۔ اور آنکھیں اِس کی کون نرگس کی مناسبت دیجیے، تو نرگس تو چشم حیران رکھتا ہے اور اِس کی آنکھیں تو رسیلی ہیں۔ اور کھینچن میں کی جو مناسبت

(۱) دُوج کا چاند : دوسری تاریخ کا چاند، ہلال (۲) کھینچن: مولیے کی قسم کی چڑیا جسکی دم ہاتی رہتی ہے۔ چنچل ہوتی ہے اسلئے ہندی شاعری میں تشبیہ آنکھ سے دیتے ہیں۔۔

دیجیے چنچلا پن کی، تو اُس میں چنچلا پن نہیں ہے۔ وہ تلپتے ہیں اس واسطے کہ کوئی ہمارے تاہیں ان آنکھیں کی مناسبت دے۔ اور ان کا چنچلا پن جو ہے سو پٹیٹی اور بکتی<sup>۲</sup> کا ہے کہ اپنے کٹا چہ کے پٹے سے اُرنے کے بانک<sup>۱</sup> سے اور و (و) کون مارتیں ہیں اور آپ بیچ رہتی ہیں، کیوں کہ اور کا اثر تو جد ہورے تد ان سے پچھے۔ اور جو اِن کون مناسبت کھینچن کے رنگ کی ایزر ڈول کی دیجیے، تو جد کھینچن آنکھوں کے ڈول کون نہ پہنچا تب سفیدی پھینکی پڑی اور سیاہ داغ هوا۔ جو اُس کی مناسبت بادام سے دیجیے، تو جب بادام اُس کی مناسبت کو نہ پہنچا تب بادام کی چھاتی میں چھید پڑے۔ جو ہیرے

(۱) تلپنسا : تڑپنا (دسب رس، اور داغ بہار، میں بھی آیا ہے) (۲) پٹیٹی : پٹہ بازی (۳) بکتی : بنوٹ (۴) کٹیا چہ (کٹنا کش) : تر چھی نظر، غمزہ (۵) ابرنے (ابرنا) : اٹھنا (۶) بانک : بنوٹ، بکتی (کٹار نما ٹیڑھی چھریوں سے بیٹھا کر یا ایک کر کھیلا جاتا ہے) خنجر، کٹار۔۔

جال ہیں۔ اور کرن بھول جو ہیں سو یے کرن بھول نہیں، کمل کے بھول ہیں کہ اپنے تائیں، کان جو اُس کے بھول سے ہیں، تس کی برابری کو آنے تھے، سو جب اُس کی گولمنا<sup>۱</sup> و رنگ کوں نہ پہچتے، تب باندھ کے لٹکائے دئے کہ پھر کوئی ایسا نہ کرے۔ اور جو کانوں کوں مناسبت سیپ کی دیجئے، تو سیپ میں اپنی نرمائی<sup>۲</sup> کہاں؟ اور رنگ بھی جو ایک طرف پایا ہے سو بھی، اِس کے رنگ کوں کہاں پاورے۔ اور کام<sup>۳</sup> کے چھاج کا و بہہ کا تو کیا مذکور ہے۔ اور نازک؛ اِس کی ہے سو گویا کندن کی آڈھے کہ آنکھیں جو دونوں کامونت<sup>۴</sup> مست ہاتھی میں تِن کی آڈھے۔ اور ۲۰۰۰۰۰۰۰ کوں ۱۰۰۰ الف ۱۶ کی مناسبت دیجئے تو کوئی رنگ اُس کا ایسا نہیں (جو) اِس کی مناسبت کوں پہچتے۔ اور گالوں کے تائیں جو

---

(۱) گولمنا: نزاکت (۲) نرمائی: نرمی، ملائمت (۳) کام: عشق، شہوت۔۔ (۴) نازک: نازک (انفی تاغظ) (۵) کامونت: عاشق مزاج، شوخ۔۔

کی چمک کوں اور سفیدی کوں آنکھ کی مناسبت دیجئے تو جب ہیرا اِس کی برابری کا قصد کیا تب لالی آپ میں پیدا کی تو ایسا گرا کہ دکھی ہوا۔ کیوں کہ جد کوئی بڑوں کی برابری کرے سو تو گرے ہی گرے۔

ب ۱۵ اور سیاہی/اِس کی کے تائیں کوں جو نیلمن<sup>۱</sup> کی مناسبت دیجئے تو نیلمن جب اِس کی سیاہی کوں نہ پہچا تب نیل کا ٹینکا لگا اور نیلمن کہاں۔ اور کمل کو اِس کی مناسبت دیجئے، تو کمل میں ایسی چتون کہاں؟ اور مرگ<sup>۲</sup> کو جو یاکی<sup>۳</sup> اُماں<sup>۴</sup> دیجئے، تو مرگ نے ایسی سفیدی اور سیاہی اور لال ڈورے اور متوار پنا<sup>۵</sup> کہاں سے پایا۔ اور مرگ کی آنکھیں تو اداس ہیں، یے (گلگلوں) ہیں۔ اور اسی سے اُن نے بن باس لیا ہے۔ اور لال جو ڈورے ہیں، سو یے ڈورے نہیں ہیں، کہنچن روپی جو من ہے تا کے پکڑنے کے لال ریشم کے

---

(۱) نیلمن: نیلم (۲) مرگ: ہرن (۳) یاکی: اِس کی (۴) اُماں: تقسیمہ (۵) متوار پنا: متوالا پن۔



جو ہے ، سو مسیٰ تو مانوں سیام کہتا ہے اور دانتوں کا جو چمچاٹ ہے سو مانوں بجلی چمکتی ہے سیام کہتا میں -  
 ہونٹوں کے اوپر جو مسیٰ کی دھڑی کی ہے اور گہری ب ۱۶  
 سرخی ، مانوں ۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰ کی ہے ، اور گہلی  
 سرخی ہونٹوں کی ہے - (اس کی) سوہا نے دھنک  
 کوں کشت دی ہے ۔ اور سیب کوں جو ٹھوڑھی کی  
 مناسبت دیجئے تو سیب میں اتنی خوبصورتی اور خوش  
 ڈولی کہاں - اور زلف کے تاہیں کہہتیے کہ زلف نہیں  
 ہے، عاشق کا من ، اس کے روپ کا جو مست ہانھی  
 ہے، تس کے باندھنے کی گویا زنجیر ہے - یا بے ہوزرا  
 ہیں، ۴۴۰ جو اس کا کھل سروپ ہے، تس کے اوپر  
 بیٹھے ہیں - تو زنجیر میں و ہوزروں میں سکھارتا  
 و خوشبوئی اور خوبصورتی کہاں؟ اور گردن اس کی  
 کوں جو سکھ کی مناسبت دیجئے، تو سکھ ایک ہڈی  
 ہے، بدڈول - اور جو صراحی کی اسے مناسبت دیجئے،  
 تو صراحی تو بنائی ہوئی ہے، بنائی بست اصل کر کہاں

(۱) بست (وست) : چیز -

گلاب کے پھولوں کی مناسبت دیجئے تو اگر خوشبوئی  
 کر و گونلتا کر اسے پہچتے بھی تو صفائی کالوں کی  
 کوں کہاں پانویں - و سے مانند آئینہ کے ہیں - اور  
 کالوں میں جو لالے کی پیچک ہیں، سو بہ پیچک نہیں  
 ہیں، بھنور ہے کہ جہاں من عاشق کا پڑتا ہے، سو نہیں  
 نکلتا - اور یہ گال پے تل نہیں ہے ، پیاری کا منہ جو  
 آئینہ سا ہے ، سو عاشق کا دل داغ ہے، سو اس کا  
 عکس پڑا ہے - اور ہونٹوں کے تاہیں جو کیندوری<sup>۲</sup>  
 کی مناسبت دیجئے تو کیندوری نے یہ نازکی و صفائی  
 و خوبصورتی کہاں سے پائی - اور جو مونگے کی مناسبت  
 دیجئے، تو مونگا تو پتھر ہے اس کوں کہاں پہچتا ہے -  
 اور دانتوں کے تاہیں جو انار کے بیج کی اُچاں دیجئے تو  
 انار کے بیج اس کی نازکی و پتلائی کو کہاں پہچتے  
 ہیں، و سے تو گول ہیں - اور مسیٰ جو اس نے لگائی  
 ہے دانتوں کوں، اور پان جو چاٹے ہیں ، اور ہنستی  
 (۱) کونلتا (کولتا) : زناکت (۲) ہونٹوں : ہونٹ

(۳) کیندوری : ایک سرخ رنگ کا پھل جسے نب بھی کہتے ہیں -

سُوہنی ہے، سو کیسی ہی موہنی ہے، اور بس کرتی ہے۔ کیسی طرح بس کرتی ہے کہ نس سے بھر چھٹکارا نہیں۔ اور کھڑی ہیں۔ کریری<sup>۱</sup> میں، اور کینچن برن<sup>۲</sup> ہیں۔ اڈول<sup>۳</sup> میں، اور گوری میں وگول ہیں۔ اور جو ان کے تائیں مناسبت دیجے کینچن کلاس کی یا کینچن کے تقارے کی، یا کیند کی یا دونان کی، یا حباب<sup>۴</sup> کی، یا سمیر<sup>۵</sup> کی، سو وے باتیں جو سب ان میں ہیں سو ان میں کہاں۔ اور جو کہیں کہے جے دونوں چھترتی ہیں<sup>۶</sup>، اور ۰۰۰۲۰۰۰ ان کے ساتھ ہے۔ اور مروارید کی جو مالا ہے، سوئی ہوتی گنگا نس سے نہیں بھر سکتی ۰۰۰۲۰۰۰۰ کام کا جو کٹک

(۱) کریری: سخت (۲) کینچن برن: سونے کے رنگ کی (۳) اڈول: بہاں برے معنوں میں نہیں بلکہ چھاتیوں کی نسبت سے مخروطی گولانی کے لئے استعمال کیا گیا ہے۔ (۴) اصل املا، ح پر پیش (۵) سمیر: پہاڑ، (ایک خاص پہاڑ جس کا نام میرو بھی ہے اور جو سونے اور جواہرات کا بنا ہوا ہے اور دیوتاؤں کا مسکن ہے) (۶) چھترتی: راجہ

پہچے۔ اور جو باہیں اس کی کوں کھل کی جڑکی رچنپے کی شاخوں کی مناسبت دیجے تو وے تو ایک لکڑی میں نازاشی ہوتی۔ اس کی خوبصورتی و نزکائی<sup>۱</sup> و خوش ڈولی کوں کہاں پہچتی ہیں۔ اور ہاتھ اس کے کے تائیں کوں جو کھل کی مناسبت دیجے، تو کھل جب اس کی خوبصورتی کوں نہ پہچے تب دل ان کا ۱۷۰ زر دھو گیا۔ اور جو اس کے تائیں / ۰۰۰۰۳۰۰۰ کی

مناسبت دیجے تو اس کے ڈینے سے لوگ ڈر رکھتے ہیں، (اور) اس کے ڈینے کی آرزو رکھتے ہیں۔ اور اس کے ڈینے کا تو علاج ہے، اس کے ڈینے کا علاج ہی نہیں۔ اور اس کی انگلیوں: کوں (جو) اپناں پھلی کی دیجے تو پھلی تو یکساں ہے اور وے گلاؤم<sup>۲</sup> میں، اور ان کی خوبی کوں کہاں پہچے۔ اور جو اس کے ہوں<sup>۳</sup> کوں چاند کی مناسبت دیجے، تو دوج کے چاند<sup>۴</sup> کوں جو سب دیکھتے ہیں سو اس کے ایک نہہ کی کور کوں بھی نہیں پہچتا۔ اور چھاتی جو اس کی

(۱) نزکائی: نزاکت (۲) گلاؤم: مخروطی (۳) نہہ: ناخون

(۴) دوج کا چاند: دوسری کا چاند۔

ھے سو عاشق کے مارنے کو ۳۰۰۰۰۰۰ میں  
 بھر نے کوں ہیں - ار ۱ جو ھے سو جو گان ھے ،  
 تا میں کچھ جو ہیں سو کام نسان ۱ ہیں - سو بے نسان  
 کیسے ہیں کہ اجیت ۲ ہیں - تا ۱ بکھیں ۱ من روپی جو گیند  
 ہیں سو نکل نہیں سکتے - اور جو اس کی کھر کوں  
 کیہری ۱ کی کھر کی مناسبت دیجئے ، تو کیہری کی کھر تو  
 موٹی ھے ، بد ڈول ھے ، اور اس کی کھر تو پتلی ھے ، بال  
 سے بھی - جد قیاس کر دیکھتے تد معلوم ہوتی ھے -  
 اور جو اس کے پانوؤں کوں کینول کی مثال دیجئے ، تو  
 کھل انہوں کی خوبی کوں کہاں پہچ سکتا ھے - کینول  
 چاہتا تھا کہ میں اس کی خوبی کوں پہچوں ، سو اس  
 کے واسطے سورج کی طرف منہ کھولتا ھے کہ اس کی  
 کچھ کرانت ۶ مو ۱ میں آوے تو پہچوں - پر جد اس  
 کی خوبی کوں نہ پہچا ، تد پھر شرمندا ہو کے منہ

(۱) ار : سینہ (۲) نسان ( نشان ) : جھنڈا (۳) اجیت : جسے  
 جیتا نہ جاسکے (۴) تا : اس (۵) بکھی : بغل کے نیچے کا حصہ  
 (۶) کیہری : شہر (۷) کرانت : چمک (۸) مو : منہ -

چھپائے ھام کوں نیچی گردن کر کے رہ جاتا ھے -  
 اور یاقوت کی جو بازیب ھے ، سو بے بازیب نہیں تارا  
 گئی ۱ ہیں - اور ہیروں کے جو آوٹ ۱ ہیں اس کے  
 پانو میں ، سو آوٹ ۱ نہیں ، سورج اپنے ۰۰۰۰/۰۰۰ الف ۱۸  
 رکھتا تھا ، و جد اس کے پانوؤں کے تیج کے آگوں ۳۰۰۰  
 کے ۰۰۰ تارا گئی سمیت پانوؤں لگا - ایک ایک انگ اس  
 کے کے ایٹا بستان ھے اور ایسی خوبی ھے کہ جس انگ  
 پر نظر پڑتی ھے کہ سیر اس کی سے اور دام حسن اس  
 کے سے آنگوں نہیں چل سکتی - سکھیاں بھی جو ساتھ  
 اس کے رہتی ہیں سو وے بھی کد ہی نکھ سکھ سے  
 دیکھی نہیں - تو جیسی ہی تو سو بھا ۱ سبز کا رکشی  
 کے جوڑے کی اور تیزی ہی جھمک لال طاش کے  
 پانجامہ کی ، اور تیزی ہی بہار مہدی ۱ کی لالی کی -

(۱) تارا گئی : تاروں کا جھرمٹ (۲) آوٹ : پیر کے انگوٹھے  
 میں پہننے کا ایک قسم کا چھلا (۳) سو بھا ( شو بھا ) :  
 بھاوٹ (۴) مہدی : مہندی (غیر اننی تلفظ) -

کبھی لالی ہے، اگر خوش رنگ یا قوت اس کے ہاتھ میں دیکھے تو معلوم نہ ہو، اور معلوم ہونے تو اس کے آگے بھینکا لگے۔ اور تیسری ہی چمک جڑاؤ چنپا کلی کی اور دو لڑی اور دھک کی اور مرزبان کی تسیح اور بدھی، کہ جو اپنے نام ہی موافق کام کرتی ہے۔ اور بازو بند و پہنچی دست بند و سمور<sup>۱</sup> اور چوڑی و جھانگری و انگونھی و چھلون کی۔ اور جیسی ہے خوبی اس کے بدن کی سڈولی (اور نازک) تو ویسے ہی ہے پر نازکی گوشت لیش<sup>۲</sup> ہے کہ ہڈی جس کی تار سے بھی پتلی ہے۔ اور جیسی ہے کانت اس کے رنگ کی اور تیسری ہی دیکھ دیکھ ۱۸۸ خوبی اس باغ کی و بہار سکھیوں کا دیکھ کے / خوش ہو کر، ایک امک عمر کی سے امٹک کے ۱۰۰۰ اور جھمک کر یکبارگی ہی تخت پر سے اتری اور کمر کے لچکنے کی اور ٹکوں کے لچکنے کی اور پانوں

(۱) سمرون : مالا (۲) لیش : نیک (۳) بہار : سلوک

کے ڈگنے کی اور جواہر کی جنبش کی اور جوت پھیلتے کی، ایسی آن ہو گئی گویا بجلی تھی کہ چمک گئی اور عاشق کے دل پر پڑی۔ یا شاہیں ہے کہ عاشق کے ہنس روپی من کوں شکار کیا۔ دیکھ اس سے کون بادشاہزادہ تاب نہ لایا۔ پھاڑ کھا کے ایسا گرا کہ سدھ نہ رہی۔ وزیر زادہ کیا کرتا ہے، حوض میں سے جو گلاب کی نہر چلی آتی ہے اس سے چھڑک چھڑک بادشاہزادے کوں، ہوش میں لیاواتا ہے۔ اور پھر دیکھ دیکھ بادشاہزادا بے ہوش ہو جاتا ہے۔ جس وقت کہ داہر سکھیوں کوں لے کر سیر باغ کی کوں چلی، تو اگر اس کی چھال کو مناسب گینڈا یا ہنس یا چکور کی دیکھے تو ان کی چھال تو موٹی بہاری ہے اور اس کی چھال نازک ہے۔ جو قدم کہ رکھتی ہے تو ہزار ناز اور احسان اوپر جان عاشق کے کرتی ہے کہ نگاہ عاشق کی پانداز ہے جس کی۔ اور زگس جو یہ بھولا ہے سو زگس نہیں، از بسکہ پانو اس (کے)

(۱) اصل املا گینڈا : گینڈا۔